P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-5* August- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मथुरा मूर्तिकला की अनुकृतियाँ अलीगढ़ के संदर्भ में

निशा माहौर
शोधार्थिनी
चित्रकला विभाग,
धर्म समाज महाविद्यालय,
अलीगढ़

सारांश

मथुरा श्री कृष्ण की नगरी के नाम से विख्यात है। यहाँ गंगा व यमुना की धाराएँ अपने छोर पर विभिन्न संस्कृतियों को सँभाले हुये हैं जिसकी परिधि यहाँ की मूर्तिकला व स्थापत्यकला में दिखाई देती है। यहाँ हिन्दू, बौद्ध व जैन धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ बनायी गयीं। यहीं पर सबसे पहले हिन्दू–देवी देवताओं की मूर्तियों की कल्पना की गयी। जिसमें शिव की अनेक एक मुख व कई मुख वाली मूर्तियाँ मिलती हैं। जिसमें कुषाणकालीन सिक्कों पर शिव को नंदी बैल पर बैठे दिखाया गया है। विष्णु की चतुर्थभुजी व अष्टभुजी प्रतिमायें मथुरा शैली में बनी हैं।

कुषाण शासकों की यहाँ अनेक मूर्तियाँ मिली हैं। इनमें कनिष्क की सिररहित मूर्ति, जो खड़ी मुद्रा में है। यह 5 फीट 7 इंच की है। इसके पैरों में बड़े–बड़े जूते व दायाँ हाथ गदा पर टिका है और बायें हाथ में तलवार की मुठ पकड़े है। इसके अतिरिक्त यहाँ बोधिसत्व की खड़ी व बैठी अनेक मूर्तियाँ मिली हैं जिसमें कटरा से मिली बोधिसत्व की मूर्ति जिसका दायाँ हाथ अभय मुद्रा में ह। उनकी हथेली व पैर के तलवों पर धर्मचक्र और त्रिरत्न के चिन्ह बनाये गये हैं। मथुरा मूर्तिकला में इन मूर्तियों को दानेदार पत्थर से बनाया गया है जिसे निकट ही तातपुर, सीकरी एवं रूपवास आदि स्थानों से प्राप्त किया जाता था। यह पत्थर बहुत ही मुलायम होता है जिसके कारण यहाँ की मूर्तियों में सौन्दर्य के साथ–साथ लावण्य भी प्राप्त होता है। परन्तु धातु के रूप में इनकी अनुकृतियाँ वर्तमान समय में व्यापारिक व धार्मिक रूप से अलीगढ़ में बनायी जा रही हैं।

मुख्य शब्द : अलीगढ़, धातु, ढ़लाई, तकनीक व माध्यम, व्यवसाय।

प्रस्तावना

भारतीय कला में मूर्तिकला एक आश्चर्यजनक अद्भुत कलात्मक आकृति के रूप में प्रतिष्ठित रही है। विविध युगों में मूर्ति धार्मिक विषय–वस्तु व स्थापत्य कला के रूप में निरन्तर विकसित होती रही है। जिसके साक्ष्य अजन्ता, एलोरा के प्राचीन गुफा मंदिरों में देखे जा सकते हैं। इन गुफा मंदिरों में निर्मित मूर्तियों को देखकर प्रतीत होता है कि संसार का सारा सौन्दर्य आन्तरिक अभिव्यक्ति, संयोजन, माध्यम व आत्मबोध से प्रेरित होकर आकारों में देवतत्व की भावना में समाहित हो गया है।

समय के साथ–साथ मूर्तियों के परिवर्तित रूप सामने आते गये। इस आधुनिक युग में मूर्तियों को पत्थर से काटकर बनाने के साथ–साथ उसे नई तकनीक व माध्यम के साथ ढ़ाला जा रहा है जिस तरह से अलीगढ़ धातु से बनी मूर्तियों की अनुकृतियाँ बनाने में नयी पहचान बनाने की कोशिश कर रहा है। जिसके कारण इन मूर्तियों को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भेजा जा रहा है। परन्तु इन मूतियों को किस तकनीक व माध्यम के द्वारा तैयार किया जाता है, इस बात से अन्य लोग अभी भी अनभिज्ञ हैं। अलीगढ़ के छोटे–छोटे व बड़े क्षेत्रों में रहने वाले साधारण व्यक्तियों द्वारा इन्हें परिश्रम के साथ तैयार किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोधपत्र के माध्यम से अलीगढ़ की पीतल की मूर्तियों को प्रकाश में लाने का संक्षिप्त प्रयास कर रही हूँ। अलीगढ़ को तालों की नगरी के नाम से जाना जाता रहा है परन्तु वर्तमान में अलीगढ़ ने पीतल की मूर्तियों के रूप में एक नई पहचान बना ली है। यहाँ बौद्ध व हिन्दू धर्म से सम्बन्धित मूर्तियों की अनुकृतियाँ बनायी जाती हैं। जिसे शिल्पकारों के द्वारा नहीं वरन् यहाँ के साधारण व अशिक्षित व्यक्तियों द्वारा बनाया जाता है।

साहित्यावलोकन

ममता चतुर्वेदी (2016) ने अपनी पुस्तक ''समकालीन भारतीय कला'' (पृ0 152, 161) में समकालीन मूर्तिकारों द्वारा विभिन्न तकनीक में बनायी गयी मूर्तियों का वर्णन किया है। जिस प्रकार से आधुनिक मूर्तिकार देवी प्रसाद रॉय चौधरी द्वारा काँस्य में बना मूर्तिशिल्प 'श्रम की विजय' जो वर्तमान में मरीना बीच, चेन्नई में स्थित है।

'श्रम की विजय' (काँस्य)

मीरा मुखर्जी समकालीन मूर्तिकार अपनी डोकरा मूर्तिशिल्पों के लिये जानी जाती हैं। इन्होंने मध्यप्रदेश के आदिवासियों से ढ़लाई की प्राचीन तकनीक लोस्ट वैक्स सीखी जिसे उन्होंने ब्रॉन्ज कास्टिंग के साथ संश्लेषित करके नई शैली के रूप में विकसित किया। इनके मूर्तिशिल्पों मे 'फिशर मैन' (Fisherman) प्रसिद्ध है। इन्होंने मूर्तिशिल्प पर अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं, जिसमें मेटल क्राफ्ट्समैन इन इण्डिया, फोक मेटल, आर्टिजन्स, ब्रास वर्कर्स, ब्रासवेयर इन बस्तर आदि हैं।

'Fisherman'

Asta Guru Online Auction (2016) "Contemporary Indian Art" (March 14-15) प्रफुला सिंह – आप पीतल में बनाये अर्मूत मूर्ति शिल्पों के लिये जानी जाती हैं। आपने शिक्षा एम0एस0 विश्वविद्यालय, बड़ोदरा से ली है। वर्तमान में मुम्बई में कार्य कर रही हैं। आपने अपने मूर्तिशिल्पों को जीवन की प्रत्यक प्रक्रिया को प्रकृति की ऊर्जा व शक्ति के साथ दिखाया है। आपके अमूर्त मूर्तिशिल्प में 'I am a Fighter' 42x19x22 Inch (106.7 x 48.2 x 56 cm) Brass & Light 2011 प्रमुख है।

वलाय शिंदे का जन्म 15 सितम्बर, 1980 नागपुर में हुआ था, जो समकालीन मूर्त मूर्तिकार के रूप में जाने जाते हैं। आपने शिक्षा गर्वमेंट चित्रकला महाविद्यालय, नागपुर से ग्रहण की। आपने 'Human Figure, 'City Scapes', 'Political', 'Animals' में मूर्तियाँ बनायी हैं। आपने पीतल में असंख्य मूर्त मूर्तिशिल्प बनाये हैं जिसमें 'Buffalo' (2008), 'Boy with Balloons' (2015) प्रसिद्ध हैं।

'Buffalo'

वेद प्रकाश भारद्वाज (2016) ने अपने लेख ''परम्परा का नवोन्मेष'' (कला दीर्घा दृश्य कला की अन्तरदेशीय पत्रिका, अप्रैल 2016, वर्ष 16, अंक 32, पृ0 30) में मूर्तिकार बिमान दास के मूर्तिशिल्पों के सन्दर्भ में लिखा है। आपके द्वारा बनाये गये मूर्तिशिल्पां में कृष्ण को साधारण व्यक्ति के जीवन के रूप में, वहीं बौद्ध को मन की शान्ति के रूप में बनाया है। आपके धातु में बने अमूर्त शिल्प मूर्त की ओर ले जाते हैं जिसमें कृष्ण की लीलाओं को आपने अमूर्त रूप में बनाया है।

मीनाक्षी कासलीवाल 'भारती' (2011) ने अपनी पुस्तक ''भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला'' (पृ0 354, 366, 368) के माध्यम से दक्षिण भारत में काँस्य व धातु से बनी मूर्तियों का विवरण दिया है। 10वीं शताब्दी में चोलवंशीय कला में काँस्य, ताँबा व पीतल से सम्बन्धित मूर्तियाँ मिली हैं। इस काल में शैव धर्म से सम्बन्धित

असंख्य मूर्तियों का निर्माण हुआ है जिसमें प्राचीनतम विधि लोस्ट वैक्स (Cireperdue) के द्वारा साँचे में ढ़ालकर मूर्तियाँ बनायी गयी हैं। इस काल की मूर्तियों में नटराज, दक्षिण भारतीय काँस्य प्रतिमा नेशनल म्युजियम नई दिल्ली, दीप लक्ष्मी 16वीं–17वीं शताब्दी की पीतल प्रतिमा 21.8 से0मी0 कल्याणसुन्दर 10वीं शताब्दी तजाँवुर आर्ट गैलरी, अर्धनारीश्वर 11वीं शताब्दी गवनमेंट म्युजियम, मद्रास।

तकनीक व माध्यम

किसी भी धातु से मूर्ति बनाने के लिये सबसे पहले उसके लिये भट्टी बनायी जाती है जिसके द्वारा ही मूर्तियों की अनेक अनुकृतियाँ बनायी जा सकें। भट्टी को चार व्यक्तियों के सहयोग से बनाया जाता है जिसमें पहला पीतल गलाने वाला, दूसरा पैटर्न दबाने वाला, तीसरा मिट्टी पीसने वाला, चौथा पंखा चलाने वाला। भट्टी में प्रयोग किये जाने वाले औजार – संड़ासी, चिम्टा, लोहे का बेलन, लोहे की पत्तो, लोहे की प्लेट आदि।

भट्टी के लिये पक्की या कच्ची दोनों ही जगहों का प्रयोग किया जा सकता है। इसके लिये सबसे पहले गढ्ढा खोदा जाता है जिसमें मिट्टी की बनी गागर एवं लोहे का पाइप फँसाया जाता है फिर गागर के ऊपर लोहे की सरिया रखी जाती है। इसके बाद बीच म जगह खाली छोड़कर ओर पास उसे पीली मिट्टी से लेपा जाता है। लेपने के बाद लोहे का गोल ढ़क्कन जिसे साँचा कहते हैं यह ढ़क्कन दोनों तरफ से खाली होता है, जिसे मिट्टी से भरकर सख्त कर दिया जाता है। जिसका उपयोग गढ्ढे को ऊपर से ढ़कने के लिये करते हैं। मिट्टी में लगे हुये लोहे के पाइप को तिरछा लगाकर उसमें पंखा (जो सिलवर) का होता है, फिट कर दिया जाता है।

गागर के ऊपर जो सरिया रखी गयी है उसमें छोटे–छोटे लकड़ी के टुकड़े व कोयले डाले जाते हैं। कोयले लगाने के बाद उसके ऊपर कुठाली (खड़िया मिट्टी, गेरू का मिलाकर तैयार की जाती है। लेकिन अब इसे बाजार द्वारा प्राप्त किया जा रहा है। कोयले लगाने के बाद उसके ऊपर कुठाली रखी जाती है। कुठाली जिसमें पीतल के बर्तन तोड़कर या सिल्ली गलाई जाती है। उसके बाद उसे लोहे के ढ़क्कन से ढ़क दिया जाता है। पंखे की हवा द्वारा पीतल गल जाती है। उसके बाद इस कुठाली को सड़ासी से पकड़ कर रेजे के कोरों में मूर्ति की छाप लेने के लिये डाला जाता है।

एक मूर्ति की एक जैसी अनुकृतियाँ तैयार करने के लिये उसका पैटर्न (फर्मा) बनाया जाता है। इसे बनाने के लिये सबसे पहले मूर्ति को चिकनी मिट्टी से बनाया जाता है। मूर्ति बनने के बाद उसकी छाप लेने के लिये उसके दो भाग कर लिये जाते हैं। पहला भाग आगे का और दूसरा भाग पीछे का। इन भागों से अनेक अनुकृतियाँ बनायी जा सकती हैं। ये पैटर्न सोना, चाँदी, काँसा, लोहा, सिल्वर आदि किसी भी धातु का हो सकता है। मूर्ति को छाप से किसी भी धातु का पैटर्न तैयार किया जा सकता है।

पैटर्न को बनाने के लिये लोहे का रेजा जिसे साँचा कहा जाता है, यह रेजा गोल व चौकोर दोनों तरफ से खुला हुआ होता है। अब इस रेजे में मूर्ति की छाप लेने के लिये सबसे पहले लोहे की चौकोर प्लेट जमीन पर फिट की जाती है। जिसके ऊपर रेजे की प्रक्रिया शुरू की जाती है। इस रेजे से मूर्ति की छाप लेने के लिये पीली व काली दो तरह की मिट्टी का प्रयाग किया जाता है। एक रेजे के दो भाग होते हैं। पहले भाग में पीली मिट्टी जो एक प्रकार का रेता होता है, जिसे जंगल से प्राप्त किया जाता है, इस रेते को पहले गर्म करते हैं। उसके बाद इसमें शीरा (गुड़ का मैल) मिलाते हैं। इसमें थोड़ा सा पानी भी डाला जाता है। दोनों को मिश्रित करने के बाद बारीकी से पीस लिया जाता है। इस तरह से पीली मिट्टी बनकर तैयार हो जाती है। तैयार की गई मिट्टो को इस रेजे में डाला जाता है।

(प्लेट संख्या 1)

(प्लेट संख्या 2)

उसके बाद पैटर्न को मिट्टी में आधा दबाने के बाद उसके ऊपर सैलखड़ी (सफेद पाउडर) डाली जाती है। फिर रेजे का दूसरा भाग उसके ऊपर रख दिया जाता है और उसे मिट्टी से पूरी तरह से ढक देते हैं। जिसके कारण पैटर्न दिखाई नहीं देता। पैटर्न दबाने के बाद रेजे को खोल दिया जाता है। खोलने के बाद पैटर्न निकाल लेते हैं। उसमें गली हुई पीतल डालने के लिये रेजे में कोर (छेद) किये जाते हैं। जिससे वे पैटर्न का आकार ले सके। उसके बाद इन दोनों भागों को बंद कर दिया जाता है। बन्द कर देने के बाद इसमें किये गये कोर के द्वारा पीतल डाली जाती है। जब इसमें पीतल डालते हैं तब

पीली मिट्टी काली पड़ जाती है। उसके बाद दोनों रेजों को खोला जाता है। खोलने के बाद पेटर्न पर चिपकी हुई मिट्टी को औजारों क माध्यम से अलग किया जाता है। इसी मिट्टी का दोबारा प्रयोग किया जाता है। इस तरह से मूर्ति का पैटर्न बनकर तैयार हो जाता है। अब इस पैटर्न के द्वारा मूर्ति की एक जैसी अनुकृतियाँ ढ़ाली जा सकती हैं।

इसके बाद रेजे द्वारा मूर्ति का पैटर्न (फर्मा) ढ़ालने के बाद उसके ढ़ाले गय भागों को जोड़ने के लिये ऑक्सीजन व एल0पी0जी0 इन दोनों गैसों के द्वारा पैटर्न के अलग–अलग भागों को वैल्डिंग के द्वारा जोड़ने के लिये पीतल का तार व सुहागा का प्रयोग करते हैं।

(प्लेट संख्या 3)

(प्लेट संख्या 4)

इसके बाद मूर्ति को लोहे की रेतियों द्वारा साफ किया जाता है। साफ करने के बाद मूर्ति में भाव–भंगिमा दर्शाने के लिये हथौड़ी व छैनी का प्रयोग करते हैं।

(प्लेट संख्या 5)

(प्लेट संख्या 6)

भाव दर्शाने के बाद मूर्ति की अधिक सफाई करने के लिये विभिन्न प्रकार के एसिड का प्रयोग किया जाता है। उसके बाद उस पर चमक लाने के लिये मशीनों द्वारा पॉलिश एवं गोल्डन किया जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा मूर्तियाँ पूरी तरह से बनकर तैयार हो जाती हैं।

निष्कर्ष

आज मूर्तिकला ने आधुनिक व समकालीन कला में विशेष स्थान प्राप्त कर लिया है। मूर्तिकला ने विश्वभर में अपनी पहचान बना ली है। आज मूर्तिकला सौन्दर्य के साथ–साथ जीविका का माध्यम भी बन चुकी है। जिसका उदाहरण अलीगढ़ की मूर्तियों में देखा जा सकता है।

संदर्भ

1. *चतुर्वेदी, ममता, ''समकालीन भारतीय कला'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010*
2. *प्रताप, रीता, भारतीय चित्रकला व मूर्तिकला का इतिहास;;, 2012*
3. *कासलीवाल, मीनाक्षी, ''भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला'', 2011*
4. *सिंह, प्रदीप, ''भारतीय शिल्प'', आई0एस0बी0एन0 9788190690430*
5. *मूर्ति बनाने के व्यवसाय में संलग्न विभिन्न व्यक्तियों से साक्षात्कार*
6. *स्वयं – मूर्ति कार्यशाला भ्रमण*
7. *समाचार पत्र दैनिक जागरण*